

---

Shri Jogulamba Ashtakam

श्रीजोगुलाम्बाष्टकम्

Document Information



---

Text title : Shri Jogulamba Ashtakam

File name : jogulAmbAShTakam.itx

Category : devii, aShTaka, otherforms, devI

Location : doc\_devii

Proofread by : Vani V.

Latest update : July 22, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 23, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीजोगुलाम्बाष्टकम्



महायोगपीठस्थले तुङ्गभद्रा  
तटे सूक्ष्मकाश्यां सदासंवसन्तीम् ।  
महायोगिब्रह्मेशवामाङ्कसंस्थां  
शरच्चन्द्रबिम्बां भजरे जोगुलाम्बाम् ॥ १ ॥

ज्वलद्रत्नवैदूर्यमुक्ताप्रवालः  
प्रवेणयस्थगाङ्गेयकोटीरशोभाम् ।  
सुकाश्मीररेखाप्रभाख्यां स्वफाले  
शरच्चन्द्रबिम्बां भजे जोगुलाम्बाम् ॥ २ ॥

स्वसौन्दर्यमन्दस्मितामिन्दुवक्रां  
रसत्कज्जलालिप्तपद्माभनेत्राम् ।  
परां पार्वतीं विद्युदावासगात्रां  
शरच्चन्द्रबिम्बां भजे जोगुलाम्बाम् ॥ ३ ॥

घनश्यामलापादसंलोकवेणीं  
मनशङ्करारामपीयूषवाणीम् ।  
शुकाश्लिष्टसुश्लाघ्यपद्माभपाणीं  
शरच्चन्द्रबिम्बा भजे जोगुलाम्बाम् ॥ ४ ॥

सुधापूर्णगाङ्गेयकुम्भस्तनाड्यां  
लसत्पीतकौशेयवस्त्रां स्वकट्याम् ।  
गले रत्नमुक्तावलीपुष्पहारां  
शरच्चन्द्रबिम्बा भजे जोगुलाम्बाम् ॥ ५ ॥

शिवां शाङ्करीं सर्वकल्याणशीलां  
भवानीं भवाम्भोनिधेर्धिव्यनाकाम् ।  
कुमारीं कुलोत्तारिणीमादिविद्यां  
शरच्चन्द्रबिम्बा भजे जोगुलाम्बाम् ॥ ६ ॥

चलत्किङ्किणीनूपुरापादपद्मां  
सुरेन्द्रैर्मगेन्द्रैर्महायोगिवृन्दैः ।  
सदास्तूयमानां परं वेदविद्भिः  
शरच्चन्द्रबिम्बा भजे जोगुलाम्बाम् ॥ ७ ॥

हरे सोदरीं हव्यवाहास्वरूपां  
प्रसन्नं प्रपन्नार्तिहन्त्रीं प्रसिद्धाम् ।  
महासिद्धिबुद्ध्यादिवन्द्यां परेशीं  
शरच्चन्द्रबिम्बा भजे जोगुलाम्बाम् ॥ ८ ॥

इदं जोगुलाम्बाष्टकं यः पठेद्वा  
प्रभाते निशार्दथवा शुद्धचित्तः ।  
पृथिव्यां परं सर्वभोगांश्च भुक्त्या  
श्रियं मुक्तिमाप्नोति दिव्यां प्रसिद्धः ॥ ९ ॥

इति जोगुलाम्बाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Vani V.

---

—  
*Shri Jogulamba Ashtakam*

pdf was typeset on July 23, 2023

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

